स्वदेशी आन्दोलन

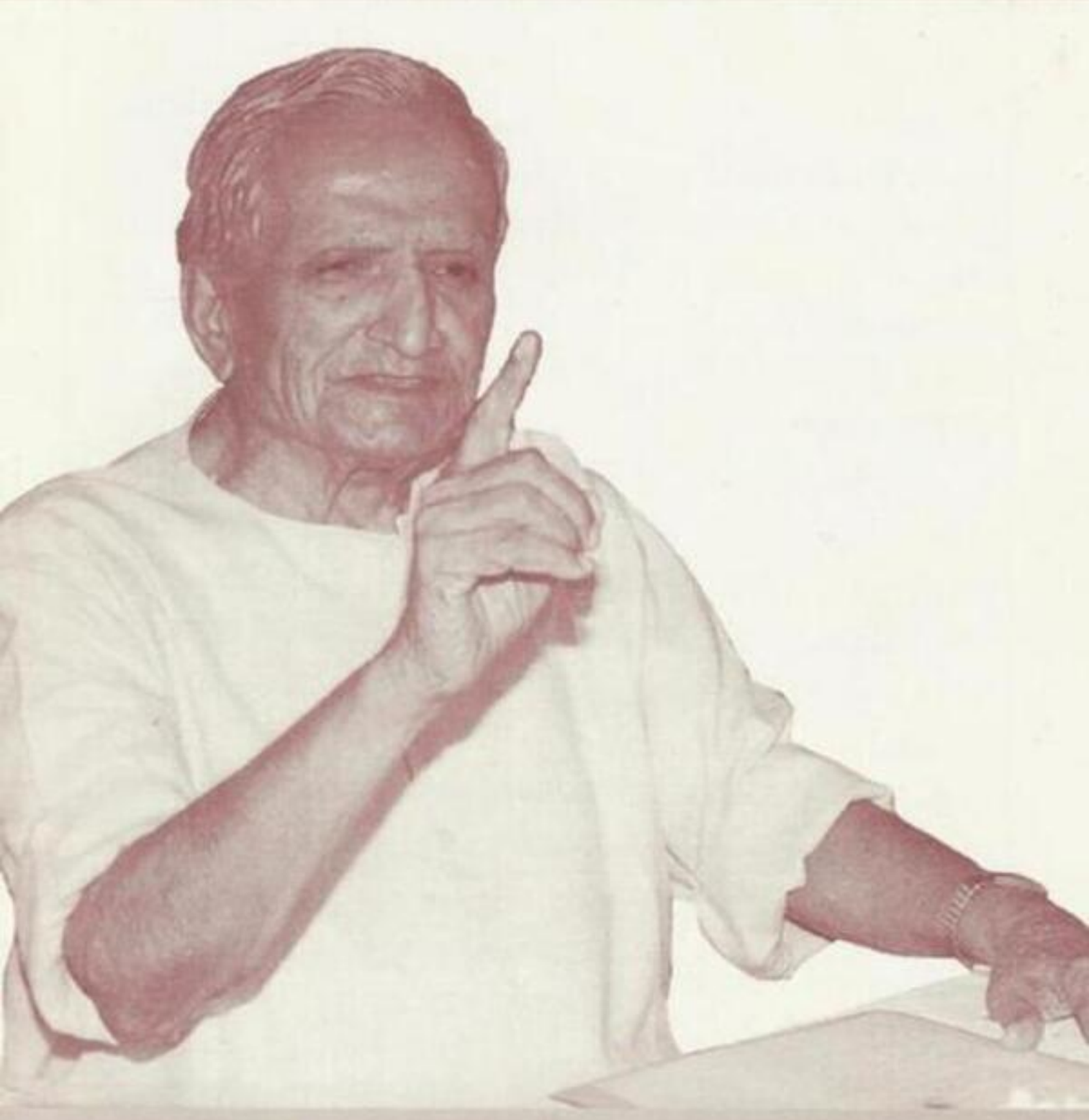

दत्तोपंत ठेंगड़ी

स्वदेशी आन्दोलन

लेखक :
दत्तोपंत ठेंगड़ी

प्रथम आवृत्ति :
2, 000 प्रतियाँ, दिनांक 25, सितम्बर, 2003
द्वितीय आवृत्ति :
20,000 प्रतियाँ, दिनांक 25, सितम्बर, 2004

प्रकाशक :
स्वदेशी विचार केन्द्र
96, पत्रकार कॉलोनी, न्यू पावर हाउस रोड़,
जोधपुर - 342003 (राजस्थान)
दूरभाष - 0291 - 2710123

मुद्रक :
हिन्दुस्तान प्रिण्टिग हाउस
जोधपुर - 342003 (राज०)
सहयोग राशि. पाँच रुपये मात्र

स्वदेशी आन्दोलन

प्रारम्भ से ही विरोध

'स्वदेशी जागरण मंच' यह नाम, अभी सब लोग जानने लगे है। किन्तु इसका ग्रह योग कुछ ऐसा रहा कि इसके स्थापना के पूर्व से ही इसका विरोध होता रहा। मैं बंगाल में गया था, वहां भाषण में कहा था, कि हम स्वदेशी जागरण मंच शुरू करने वाले है। प्रेस में भी वह भाषण छपा था, तुरन्त कम्यूनिस्टों ने प्रतिक्रिया प्रकट की, अरे यह संघ वाले हैं, आर०एस०एस० वाले हैं, इनको देश और स्वदेशी का क्या पड़ा है, इनको पैसे दिए होंगे उद्योगपतियों ने, काहे के लिए पैसे दिए होंगे, कि तुम स्वदेशी का प्रचार करो विदेशी का बहिष्कार करो और इसके कारण विदेशी माल जब पूरा हट जाएगा स्वदेशी मार्केट से, तो फिर हम लोगों को विदेशी कॉम्पीटीटर न होने के कारण उपभोक्ताओं का, ग्राहकों का, अनाप शनाप शोषण करना हमारे लिए सम्भव होगा, चाहे जितना मुनाफा हम कमा सकेंगे, इसीलिए उद्योगपतियों ने इनको पैसा दिया है।

इसके तीसरे ही दिन स्वदेशी जागरण मंच की स्थापना हुई, उसमें कुछ प्रस्ताव पारित हुए कि, आज हम स्वदेशी जागरण मंच की स्थापना कर रहे हैं इसका उद्देश्य पूरा होने तक काम करता रहेगा, और उसमें एक प्रस्ताव पारित किया कि मार्केट में आने वाली हर वस्तु की लागत कीमत "कॉस्ट ऑफ प्रोडक्शन '' उस पर लिखा जाना चाहिए।

बाजार भाव सम्बन्धी नीति

उत्पादन खर्चा, लागत खर्चा, ऐसा है कि, हमारे शास्त्रों में प्राइस पॉलीसी है, जिस समय ग्रीस में एरिसटोटल प्राइसीस एथिकल है या अनएथिकल है इसकी चर्चा कर रहे थे, उस समय हमारे यहाँ प्राइस पॉलीसी निश्चित हुई थी। "येन व्ययेन

संसिद्ध: तद व्यय: सत्य मूल्यकम्" कि इसकी रियल प्राइस क्या है? येन व्ययेन संसिद्ध: "कॉस्ट ऑफ प्रोडक्शन इस द रियल प्राइस" माने, लागत कीमत ही वास्तविक कीमत है, किन्तु रियल प्राइस हमेशा मिलती है कि नहीं, कभी कम मिलती है, कभी ज्यादा मिलती है, किस आधार पर? "सुलभासुलभ: वाच्य अगुणत्व गुणसंश्रयी, यथा कामान् पदार्थानाम् अर्घम् हिनाधिकम् भवेत्" मूल्य कभी कम होता है, कभी ज्यादा होता है, काहे के आधार पर "सुलभासुलभ: वाच्य" वह सुलभ है, या असुलभ है, यानि प्लेन्टी और स्केयरसिटी "अगुणत्व गुणशंश्रयी" "यूटिलिटि और नॉनयूटिलिटि" माने उपयोगिता और अनुपयोगिता के आधार पर। तो, "डिग्री ऑफ एवेलेबिलिटी" और "डिग्री ऑफ यूटिलिटि" इसके आधार पर, कीमत कम अथवा अधिक होती है, यह प्राइस पॉलीसी हमारे यहाँ पहले से थी।

हम लोगों ने प्रस्ताव पारित किया, कि मार्केट मे आने वाली कोई भी वस्तु, चाहे देशी उद्योगपति की हो, विदेशी उद्योगपति की हो, उसकी "कॉस्ट ऑफ प्रोडक्शन" माने लागत कीमत, घोषित होनी ही चाहिए। इससे क्या होता है, कॉस्ट आफ प्रोडक्शन जब घोषित होती है, उस पर लिखी रहती है, तो फिर अनाप शनाप मुनाफा नहीं कमा सकते, हाँ, कुछ प्रोफिट मार्जिन रहनी चाहिए यह तो सभी मानते है, प्रोफिट मार्जिन रिजनेबल होनी चाहिए। लेकिन आज जो होता है कि चार रूपये की चीज चार सौ रूपये में बेची जाती है, ऐसा नहीं हो सकेगा, तो यह हमने प्रस्ताव- पारित किया, उसके बाद कम्युनिस्टों की तूती बन्द हो गयी। उनको पता ही नहीं था, कि हमारे शास्त्र में कुछ है, उन्होनें शास्त्र पढ़े ही नहीं थे, और इसीलिए वो निन्दा कर रहे थे, किन्तु उनका बोलना बन्द हो गया।

स्वदेशी को लेकर आपत्तियाँ

स्वदेशी जागरण मंच की स्थापना होने वाली थी, उसके पिछले दिन हमारे कुछ मित्र हमारे पास आए। कहा ठेंगड़ी जी स्वदेशी जागरण मंच शुरू करने वाले हैं, तो हमने कहा "हाँ"। उन्होने कहा, माफ करें! लेकिन नहीं करेंगे तो अच्छा होगा। हमने कहा "क्यों"? तो वे बोले, आप हमारे हैं सब लोग जानते है, पर आप ही स्वदेशी की बात करेंगे, तो हमारी पोजीशन बहुत खराब हो जाएगी। लोग कहेंगे कि ये लोग हिन्दुस्तान को 16वीं शताब्दी में ले जाना चाहते हैं, दुनिया इक्कसवीं शताब्दी की तरफ जा रही है, और ये 16वीं शताब्दी में ले जाना चाहते है।

सोफिस्टिकेटिक लोग और स्वदेशी

और आप जानते है वह लीडर थे बोले हमारे कानस्टीटयून्सी में बहुत सोफिस्टीकेटिड लोग रहते हैं, उनको हम कहें कि साहब कोलगेट नहीं और प्रोमिस या और कुछ इसका इस्तेमाल करो, तो हमको हँसेंगे। मैनें कहा कि ऐसा है आपकी कान्स्टीट्यून्सी का सबसे ज्यादा सोफिस्टीकेटिड आदमी कौन है जरा सोचिए! मैनें कहा मैं जानना चाहता हूँ, पंडित मोतीलाल जी नेहरू उस समय के हिन्दुस्तान के सबसे ज्यादा सोफिस्टिकेटिड आदमी माने गए थे। ऐसा प्रवात था, कि उनके कपड़े पैरिस से धुलकर आते थे, उनसे ज्यादा सोफिस्टीकेटिड उस समय कोई नहीं था। उनके शरीर पर पूज्य महात्मा गांधी ने खद्दर चढ़ाई, तो मोतीलाल जी, जिनके कपड़े पेरिस से धुलकर आते थे, उनके शरीर पर वे खद्दर कैसे चढ़ा सके? तो मोतीलाल नेहरू से ज्यादा सोफिस्टीकेटिड आदमी आपके कॉन्स्टीट्युन्सी में कोई है क्या? तो बोले "वो तो नहीं है "।

विदेशी का बहिष्कार नकारात्मक?

और बोले "एक और प्रार्थना है" "क्या है ?" उन्होनें कहा कि बहिष्कार शब्द बड़ा नेगेटिव दिखता है, यह इज्जतदार शब्द नहीं है, यह नेगेटिव शब्द तो आप छोड़ दीजिए, हमने कहा कि आपके कॉन्स्टिट्यून्सी में बहुत इजतदार लोग दिखाई देते है, लेकिन आपको मालूम है क्या, कि 1906 में कलकत्ता में जब कांग्रेस हुई थी, उस समय अध्यक्ष दादा भाई नारोजी, इन्होनें चतुसूत्री दी थी स्वराज्य, राष्ट्रीय शिक्षण, स्वदेशी और बहिष्कार तो दादा भाई नारोजी से ज्यादा सोफिस्टीकेटिड आदमी आपकी कॉन्स्टीट्यून्सी में कितने हैं, जरा बताइए?

स्वदेशी में दृढ़ विश्वास आवश्यक

फिर हमने उनको कहा कि दिक्कत ये नहीं है, दिक्कत यह है कि तुम्हारे अन्दर 'कन्विक्शन' नहीं है, कि स्वदेशी से ही उद्धार होगा, तुमको ऐसा 'कन्विक्शन' नहीं है और इसके कारण लोगों को बताना तुम्हारे लिए कठिन हो जाता है, तो प्रारम्भ से ही स्वदेशी के बारे में ऑब्जेकेशन्स आते गए।

स्वदेशी की अवधारणा

आखिर स्वदेशी अवधारणा क्या है? वास्तव में यह मानना भूल है कि 'स्वदेशी' का सम्बन्ध केवल माल या सेवाओं से है। यह तो फौरी किस्म की सोच होगी। स्वदेशी का मतलब है, देश को आत्मनिर्भर बनाने की प्रबल भावना, राष्ट्र की सार्वभौमिकता और स्वतंत्रता की रक्षा की भावना तथा समानता के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का स्वीकार। स्वदेशी की अवधारणा माने देशभक्ति का आविष्कार है, किन्तु इतना बोलने से प्रकट नहीं होता, राष्ट्रीय जीवन, व्यक्तिगत जीवन के सभी कार्यो में, स्वदेशी का दर्शन होना चाहिए।

देशाभिमानी जापान

स्वदेशी क्या है? उदाहरण के लिए मैं बताता हूँ। 10 - 15 साल पहलें की बात है, जिस समय जापान, अमेरिका के प्रभाव क्षेत्र में था, आज नहीं है, आज बराबरी का है, लेकिन उस समय प्रभाव में था, उस समय केलीफोर्निया में बहुत संतरे हुए

"ओरेन्जेस" तो अमेरिका ने जापान को कहा, कि आपके यहाँ महिलाओं को संतरे बहुत पसन्द आते है, तो हमारे संतरे आपकी मंडी में भेजेगे, जापान ने कहा कि आपके संतरे भेजने की आवश्यकता नहीं है, किन्तु अमेरिका ने कहा कि नहीं हम भेजने ही वाले है, उस समय जापान को मानना पड़ा, जापान की मंडिया अमेरिकन संतरे से भर गई थी, लेकिन आपको आश्चर्य होगा कि सभी मंडियों में बहुत संतरे होते हुए भी, एक भी संतरा बेचा नहीं गया, पूरे जापान में। यह बात सही है कि जापानी महिलाओं को संतरे बहुत पसन्द हैं, तो भी एक भी संतरा बेचा नही गया, इसका नाम स्वदेशी है।

महारानी को मना किया

कुछ 15 - 16 साल पहले ग्रेट ब्रिटेन की महारानी ने सोचा कि भई ब्रिटेन की जो कार है, वो ज्यादा सुविधाजनक नहीं है, उससे जर्मनी की कार ज्यादा सुविधाजनक है, तो हम जर्मनी की कार खरीदेंगे, यह बात फैल गई, लोगों ने विरोध किया। लोगों ने कहा कि, महारानी साहिबा, आप हमारा प्रतीक है, कॉन्स्टिट्युशनल मोनार्क है, आप हमारे प्रतिनिधि भी है, आप ही अगर देशी कार छोड़कर विदेशी कार में जायेंगे, तो हमारे देश की नाक कट जाएगी, आपने ऐसा नहीं करना चाहिए। महारानी को जर्मन कार नहीं लेने दी गई ब्रिटिश कार में ही उनको प्रवास करना पड़ा।

वियतनाम के राष्ट्रपति

अब देखिए, कि विएतनाम के प्रेसिडेंट हो ची मिह्न भारत में आए थे जैसे वो पालम एयरपोर्ट पर, हवाई जहाज से उतरे तो उस समय लोगों को परमिशन दी गई थी, कि वो हवाई जहाज तक जा सकते हैं, तो प्रेस कारेसपोन्डेंट हवाई जहाज तक गए। वो जब उतर रहे थे, तो कुछ कारेसपोन्डेंट ने देखा और उनको आश्चर्य हुआ कि उनकी पेंट को यहाँ सिलाई थी, सिलाई थी का मतलब है कि वो फट गई होगी, तो बाद में लोगों ने पूछा कि आप तो एक राष्ट्र के राष्ट्रपति है, आपकी पेन्ट

ऐसे फटी हुई, सिलाई हुई, ऐसी आपकी पेन्ट क्यों हैं, उन्होनें जवाब दिया "माई कन्ट्री कैन अफोर्ड ओनली दिस मच", यह स्वदेशी है।

स्वाभिमानी महात्मा

गांधी इरविन पेक्ट के समय चर्चा चल रही थी, दोपहर में चाय का समय था, वायसराय साहब के लिए चाय आई, गांधीजी के लिए नींबू पानी आया। वाइसराय देख रहे थे कि गांधीजी क्या करते हैं, उन्होनें अपने जेब से एक पुड़ी निकाली, और ऐसे आराम से खोलकर मदपानी में डाल दिया, वाइसराय साहब ने पूछा कि "यह क्या है?", बोले कि "आपके नमक कानून का उलंघन करते हुए मैनें जो नमक बनाया था, उस नमक की पुड़ी, मैं इसमें डाल रहा हूँ", यह स्वदेशी है।

स्वदेशी रसगुल्ला

आजादी के आन्दोलन के समय, कलकत्ता के देशभक्त शाम के समय एक रेस्तरां में रोज एकत्र आते थे। एकत्र आते थे, तो वहाँ चाय-पान होता था, तो उस समय "ब्रिटिश पुडींग" नाम का आहार सभी का मनपसन्द होता था। परन्तु एक दिन उन्होनें रेस्तरां के मालिक को कहा कि, अब हम विदेशी "ब्रिटिश पुडींग" नहीं खाएंगे। चाहे कितना ही पसन्द आता होगा, कोई देशी, व्यंजन ही खाएगें। तो उस रेस्तरां मालिक ने छेने से पहली बार 1865-66 में रसगुल्ला बनाया और रसगुल्ला सर्वमान्य हो गया, उसके बाद छेने की और चीजें बनने लगी, इसका नाम स्वदेशी है। हर चीज में स्वदेशी, खाने में स्वदेशी, बोलने में स्वदेशी 'व्यवहार में स्वदेशी।

स्वदेशी भाषा

मेरे गांव मे, छोटा गांव है मेरा, एक बार स्वातंत्र्य वीर सावरकर आये थे। डॉ० आप्टेजी के यहां उनके उतरने का इन्तजाम था। जैसे ही वो ऊपर चढ़ गये सीढ़ी, तो पांव धोने के लिए पानी दिया, उनकी पत्नी ने, तो डॉ० आप्टे ने कहा, सावरकर जी, ये मेरी 'वाईफ' है। सावरकर जी ने हंस कर कहा- तुम्हारी मराठी भाषा में

'वाईफ' के लिए कोई शब्द नहीं है क्या? डॉ० आप्टे लज्जित हो गये, कहा, हाँ 'पत्नी' शब्द है। यह स्वदेशी का स्पिरिट है। हर बात में स्पिरिट।

कमाल पासा का स्वदेशी इस्लाम

अब आप देखिए, इस्लाम की बात हम करते हैं, मुस्तफा गाजी कमाल पासा, जब तुर्किस्तान के प्रधान हो गए, उस समय उन्होनें कहा कि अब तुर्किस्तान का स्वदेशी-करण होना चाहिए। यहां तक कि इस्लाम का भी स्वदेशी-करण होना चाहिए। उनका मार्गदर्शक गोआक आल, इस नाम का विद्वान था। उन्होनें कहा कि, अरबी भाषा के प्रभाव से जो-जो शब्द हमारी तुर्की भाषा में आये है, उनको सबको पहले निकाला जाए, भाषा शुद्धि की जाए। इसके बाद उसने कहा कि हम इस्लाम के हैं, ठीक है, कुरान को मानते हैं, ठीक है, मास्जिद में जाते है, यह ठीक है, मोहम्मद पैगम्बर साहब को मानते है, यह ठीक है, लेकिन क्या वजह है, कि इसके कारण, अरबी- संस्कृति का प्रभाव हम अपनी तुर्कि-संस्कृति पर होने दें, और तुर्की-संस्कृति पर, अरबी संस्कृति का प्रभाव नहीं हो, इसीलिए जो कुरान था, यह अरबी भाषा में लिखा हुआ था, उन्होनें कुरान का टर्की भाषा में भाषातंर करवाया, और एक शुक्रवार को तुर्की की सभी मस्जिदों में, तुर्की भाषा में कुरान पढ़ा गया, तो उस समय पुरातन-मतवादी लोग, और नवमत-वादी लोगों के बीच संघर्ष हुए और इस्तम्बुल के रास्ते पर खून बहने लगा, किन्तु उन्होनें हिम्मत के साथ स्वदेशीकरण किया, कुरान का भी स्वदेशीकरण किया।

स्वदेशी मिशनरी

हमारे यहाँ क्रिश्चियन मिशनरी लोग आते हैं, बहुत घृणास्पद कार्य करते हैं, देश विरोधी काम करते हैं, अमेरिका के एजेन्ट के नाते काम करते हैं, हम उनका निषेध करते हैं। सब ठीक है, लेकिन कुछ एक-दो सम्प्रदाय ऐसे हैं कि जो क्रिश्चियनिटि के भी, स्वदेशीकरण का विचार कर रहे हैं, जैसे बाईबल है, इंग्लिश भाषा में नहीं पढ़ते हुए, वहां की स्थानिक भाषा में पढ़ना, हर पेरे के अन्त में जो 'आमीन' आता है, उस 'आमीन' की जगह 'ओम' कहना, जो बिशप रहते है,

धर्मगुरु, उन्होंनें भगवें कपड़े पहनना ऐसे, धीरे- धीरे उनका भी स्वदेशीकरण, यह हो रहा है।

आत्म बलिदानी बाबू गैनू

ऐसे समय में स्वदेशी का महत्व यह सबने समझने की आवश्यकता है, पिछले 12 दिसम्बर को, स्वदेशी जागरण मंच की ओर से, पूरे देश में स्वदेशी दिवस मनाया गया, क्यों मनाया गया? तो उस दिन मुम्बई के कपड़ा मिल के सामने जो विदेशी कपड़ा लेकर लॉरी आ रही थी, उसके सामने बाबू गैनू, इस नाम का एक- सामान्य हमाल, वह लेट गया, और उसने कहा कि "मैं यह लॉरी नहीं जाने दूंगा", ब्रिटिश सोल्जर उन्मत्त थे, उन्होने ड्राइवर को कहा कि लॉरी इसके ऊपर चलाओ, लॉरी चलाई गई और उसकी मृत्यु हुई। यह जो उसका आत्म-बलिदान था, उसकी स्मृति में, हर वर्ष 12 दिसम्बर को हम स्वदेशी दिवस मनाते हैं, इससे स्वदेशी का कितना महत्व होगा, यह बात हमें समझनी चाहिए।

संस्कृति की रक्षा

चीन और कोरिया की सरकारों ने जब माईकल जैक्सन को इस बिना पर अपने देश में आने नहीं दिया कि उसका शो सांस्कृतिक हमला है, तब वे अपनी स्वदेशी भावना ही जाहिर कर रहे थे। यह घटना यह भी जताती है कि 'स्वदेशी' भौतिक वस्तुओं तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह एक व्यापक आधार वाली विचारधारा है जो राष्ट्रीय जीवन के तमाम पहलुओं को खुद में समेटती है।

देशप्रेम की साकार अभिव्यक्ति - स्वदेशी

तो स्वदेशी, यह भावना है, केवल आर्थिक बात नहीं हैं, और इस भावना के आधार पर ही स्वदेश ऊपर जा सकता है। **"देशप्रेम की साकार और व्यवहारिक अभिव्यक्ति है स्वदेशी"। देशप्रेम का अर्थ दुनिया से अलग-थलग रहना नहीं है, खासकर हमारी परम्परा में, जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आधार पर टिकी है। इसके मुताबिक, मानवीय चेतना के स्तर पर अंतर्राष्ट्रीयता, राष्ट्रवाद का ही विस्तार है।**

यह बात मार्के की है, कि साम्राज्यवादी शक्तियाँ अक्सर देशभक्ति को संकीर्णतावाद करार देती है। मिसाल के तौर पर दूसरे महायुद्ध के बाद जब यह स्पष्ट हो गया, कि अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के दबाव के कारण साम्राज्यवादियों को अपने उपनिवेशों को आजाद करना ही होगा, तो उन्होनें बदले माहौल में, अपने हितों की यथासंभव सुरक्षा के लिए मुहिम छेड़ दी। भारत में वायसराय के कुछ एक्जिक्यूटिव कौंसिलर उनके साधन बने। पूर्ण स्वराज को संकीर्णतावाद बताते हुए सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीयतावाद के नए युग में "हमारा लक्ष्य स्वाधीनता नहीं, परस्पर निर्भरता होना चाहिए"। डॉ० मनमोहन सिंह के उदारीकरण और भूमंडलीकरण के तर्क, रामस्वामी के, परस्पर निर्भरता वाले तर्कों के ही आधुनिक रूप हैं। यहां मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि, भारत के देशभक्त अंतर्राष्ट्रीयतावाद के खिलाफ नहीं है। राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता का उनका आग्रह, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के विरुद्ध नहीं जाता है, बशर्ते उसका आधार समानता हो। और उसमें हर देश के स्वाभिमान का सम्मान किया जाए। भूमंडलीकरण के पैरोकारों से उनका विरोध अलग और ज्यादा ठोस सवाल पर है।

'स्वदेशी वाले' इस विचार को मानने के लिए तैयार नहीं है कि विकास का पश्चिमी मॉडल सार्वभौम है और दुनिया भर के लोगों को उसकी नकल करनी चाहिए। हालांकि वे सांस्कृतिक आदान-प्रदान को स्वीकारते हैं, मगर इस बात पर जोर देते हैं, कि हर समाज की अपनी संस्कृति होती है और हर देश की प्रगति और विकास के मॉडल का उस देश के सांस्कृतिक मूल्यों के साथ तारतम्य

होना चाहिए। आधुनिक बनने का मतलब पश्चिमीकरण नहीं है। **वे पश्चिम के हित में विभिन्न संस्कृतियों और राष्ट्रीय पहचानों को, गड्ड-मड्ड कर देने की कोशिशों का विरोध करते हैं।**

आधुनिक पश्चिमी तकनीक और आर्थिक प्रणाली के साथ एक ऐसी सभ्यता आ रही है, जो गैर-पश्चिमी सभ्यताओं के अनुकूल नहीं है। विरोध का यह आधार है।

तो स्वदेशी, यह भावना है, केवल आर्थिक बात नहीं हैं, और इस भावना के आधार पर ही स्वदेश ऊपर जा सकता है। और इसीलिए **पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय** ने भारतीय जनसंघ के विजयवाड़ा सेशन में जो प्रिंसिपल एण्ड प्रोगाम दिया था, उसमें प्रमुख बात रखी थी, कि **नेशनल सेल्फ रिलाइंस, राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता,** यह ठीक है कि एकदम सम्पूर्ण आत्मनिर्भरता नहीं आ सकती, कभी- कभी विदेशों से भी लेन-देन करनी पड़ेगी, लेकिन यह लेन -देन बराबरी के नाते होनी चाहिए, इक्वल फुटिंग पर होनी चाहिए, ऐसा नहीं कि, वो हमको डिक्टेट करें और हम उनके सामने आत्मसमर्पण करें ऐसा नहीं, बराबरी के नाते होना चाहिए। यह बात पंडित दीनदयाल जी ने कही थी।

स्वदेशी मंच की सरकार के प्रति भूमिका

अभी स्वदेशी जागरण मंच के बारे में तरह-तरह के गलत ख्यालात प्रचलित है। एक इंग्लिश न्यूजपेपर ने ऐसा लिखा था, कि क्या स्वदेशी जागरण मंच आज के सरकार के लिए ओपोजिशन पार्टी का रोल प्ले करना चाहती है, तो सरकार के विषय में हमारी भूमिका क्या है। यह प्रश्न उपस्थित हुआ था। स्वदेशी जागरण मंच गैर राजनीतिक नॉन पोलिटिकल है। हमारे यहाँ संविधान है, संविधान के अन्तर्गत चुनाव होते है और चुनाव में निर्वाचित जो भी सरकार होगी किसी भी पार्टी की रहे, वह राष्ट्रीय सरकार हम मानते है और राष्ट्रीय सरकार के साथ हमारा रूख क्या है? तो वह सभी सरकारों के साथ किसी भी पार्टी की सरकार रहे सभी

सरकारों के साथ हमारा एक ही रूख रहेगा और वो क्या है? रिस्पोन्सिव को-ऑपरेशन। रिस्पोन्सिव को- ऑपरेशन का मतलब होता है, कि किसी भी पार्टी की सरकार हो हम पार्टी की फिक्र नहीं करते, किन्तु सरकार की नीति यदि स्वदेशी के अनुकूल रहेगी तो स्वदेशी जागरण मंच सरकार का समर्थक होगा, स्वदेशी के प्रतिकूल रहेगी या विरोधी रहेगी तो स्वदेशी जागरण मंच सरकार का विरोध करेगा, इस तरह से उनकी पॉलीसी क्या है, यह देखकर हम समर्थन या विरोध तय करते है कौन सी पार्टी पॉवर में है यह देखकर हम तय नहीं करते।

उपनिवेशवाद का पतन, नव -उपनिवेशवाद का अभ्युदय

अब देखिए भारत सरकार ने पिछले दशक से कुछ गलत नीति को स्वीकार किया। लोगों के भी ध्यान में एकदम नहीं आया, इसका कारण था आज जो नीतियाँ चल रही है विदेशियों की, लोग सोचते हैं कि उनका प्रारम्भ अप्रेल 1948 में जब "जनरल एग्रीमेन्ट ऑन टैरिफ एण्ड ट्रेड" निर्माण हुआ तबसे यह नीति बनी, ऐसा लोग सोचते हैं, ऐसा नहीं है। दूसरा महायुद्ध समाप्त हुआ 6 जून 1945 को, जनरल आइसन हॉवर की सेनाएं यूरोपियन कॉन्टीनेन्ट पर आ गयी, तय हुआ कि हिटलर हारने वाला है, मित्र राष्ट्रों की विजय होगी तभी से, वहाँ के लोगों ने सोचना शुरू किया, हमारे यहाँ तो राजनेता केवल कल के चुनाव की ही बात सोचते है, उन्होनें बहुत दूर की बात सोची, क्या सोचा? क्योंकि सारे साम्राज्यवादी थे, क्या इंग्लैण्ड, क्या अमेरिका, क्या फ्रांस, सभी साम्राज्यवादी थे, उन्होनें सोचा कि हिटलर तो हार जाएगा, हमारी विजय भी होगी लेकिन, अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति ऐसी है, कि हमारे गुलाम जो देश है, हमारे जो उपनिवेश, कॉलोनीज है, उनको स्वातन्त्रय देना हमारे लिए बाध्य हो जाएगा, क्योंकि उनको अपने कब्जे में रखना हमारे लिए सम्भव नहीं हैं, उनको स्वातन्त्र्य देना पड़ जाएगा किन्तु उसके कारण एक तकलीफ पैदा हुई, साम्राज्यवादी देशों की समृद्धि ऊपर से चकाचौंध करने वाली दिखती थी किन्तु ये साम्राज्यवादी देश अपने पैरो पर खड़े नहीं थे, अपने उपनिवेशों का शोषण करते हुए वह समृद्ध दिखाई देते थे।

शोषण का मतलब संक्षेप में मैं बताता हूँ जैसे हमारे विदर्भ में कपास है, अब ब्रिटिश सरकार थी, तो ब्रिटिश सरकार कम से कम कीमत में किसानों से कपास खरीदा करती थी, इंग्लैण्ड ले जाती थी, वहाँ मेन्चेस्टर, लंकाशायर में कपड़ा बनाती थी, कपड़ा बनाने के बाद हिन्दुस्तान में लाती थी और ज्यादा से ज्यादा कीमत में वह कपड़ा बेचा जाता था। वहाँ एक कच्चा माल कम से कम कीमत में लेना, पक्का माल ज्यादा से ज्यादा कीमत में बेचना, इस तरह का शोषण, इसके आधार पर वह बड़े समृद्ध दिखते थे, लेकिन उनके सामने सवाल आया, कि देश जब स्वतंत्र हो जाएंगे, तो कौन सा स्वतंत्र देश अपना शोषण करने देने के लिए तैयार हो जाएगा, कोई नहीं तैयार होगा, इसके लिए क्या किया जाए, उनकी मानसिकता बनाई जाए, अभी से प्रोपेगेण्डा शुरू किया जाए।

पूंजी और टेक्नोलोजी के नाम पर दुष्प्रचार

तो 1948 से नहीं, तभी से प्रोपेगेण्डा शुरू हुआ जिसके कारण हमारे यहाँ के इंग्लिश एज्यूकेटिड लोगों के मन पर बहुत प्रभाव हुआ। उन्होनें कहा कि कोई भी स्वतंत्र देश अपने पैरो पर खड़ा हो ही नहीं सकता जब तक हमारा इन्वेस्टमेन्ट वहाँ नहीं जाता, हमारा पैसा वहाँ नहीं जाता, तब तक वो अपने पैरो पर खड़ा नहीं हो सकता। और फिर कहा कि कोई भी स्वतंत्र देश जब तक हमारी टेक्नोलोजी नहीं लेता, हम जब तक टेक्नोलोजी नहीं देते, तब तक अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकता। अब यह इतना प्रचार जो हुआ, और यह हमारे इंग्लिश एज्यूकेटिड लोगों की विशेषता है, कि वहाँ से जो प्रचार होता है उसका सबसे ज्यादा असर इनके ऊपर होता है, सामान्य लोगों पर इतना नही होता, इंग्लिश एज्यूकेटिड लोगों पर होता है उन्होनें भी मान लिया कि, फोरेन इन्वेस्टमेन्ट के बगैर काम ही नही चलेगा, फोरेन टेक्नोलोजी के बगैर काम ही नहीं चलेगा, वास्तव में यह तर्कशुद्ध भूमिका नही है।

अब देखिए, आज हम कहते हैं केपिटल फोर्मेशन हमारे यहाँ नही हुआ और उसके कारण और विदेश से पैसा यहाँ लाना ही पड़ेगा, हम समझ सकते हैं कि

कई क्षेत्रों में विदेशी पैसों की आवश्यकता होगी, लेकिन विदेशी पैसा कहाँ लगेगा, यह हम तय करेंगे। हमारी आवश्यकता क्या है? अभी दोहा में यह बात आई थी। यूरोपियन देशों ने कहा कि हमे पूरी दुनिया में 'राइट टू इन्वेस्ट' चाहिए, हम जहाँ चाहे, जिस ढ़ंग से चाहे, उस ढंग से इन्वेस्टमेन्ट कर सकें। ऐसा अधिकार हमको मिलना चाहिए। अरे! हमारी सम्प्रभुता का क्या होगा? सोवेरिनिटी का क्या होगा? हमारे देश में आपकी इन्वेस्टमेन्ट हमें कहाँ चाहिए, कितनी चाहिए, यह हम तय करेंगे।

अब यहाँ इन्वेस्टमेन्ट हो रही है, कोका-कोला, पेप्सी की। क्या हम लोग, केवल ये जो पेयजल है यह भी तैयार नहीं कर सकते? टेक्नोलोजी, बड़ी टेक्नोलोजी छोड़िए, किन्तु ये जो पेयजल की होती है, क्या यह भी हम तैयार नहीं कर सकते? इसमें भी हमें फोरेन इन्वेस्टमेन्ट और फोरेन टेक्नोलोजी चाहिए। सच्ची बात यह है कि 'हम जहाँ चाहेंगे, वहाँ वह टेक्नोलोजी देने वाले नहीं, पैसा लगाने वाले नहीं, क्योंकि उसमें उनका मुनाफा नहीं है, और वो अपनी अपडेट टेक्नोलोजी देकर अपना नुकसान नहीं करेंगे। उनके लिए जहां मुनाफा होता है, वहाँ वह पैसा लगायेंगे।

पूंजी का सवाल

हमारे नेताओं ने कहना शुरू किया 'कि साहब, लोग देश के लिए त्याग ही करने को तैयार नहीं तो हम क्या करें? हमको फोरेनर्स के पास जाना पड़ता है। 'क्या यह बात सही है? राजनेताओं ने कहा कि 'हर एक आदमी स्वार्थी है, इसके कारण अब फोरेनर्स के पास जाना बाध्य हो जाता है। 'बात ऐसी है कि हर एक आदमी स्वार्थी है, यह सच है, किन्तु साथ ही साथ आवश्यकता पड़ने पर आदमी त्याग भी कर सकता है।

अब आप देखिए... नेताजी सुभाषचन्द्र बोस दक्षिण एशिया गए, वहाँ भारत से गए हुए व्यापारी थे, व्यापारी तो अपना मुनाफा कमाने के लिए, स्वार्थ के लिए ही

गए थे। लेकिन जब नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने स्वातन्त्र्य के नाम से आह्वान किया तो लोगों ने अपना पैसा दिया, इतना ही नहीं महिलाओं, जिनको अपने अलंकार गहने बहुत पसन्द आते वो भी नेताजी के चरणों में उन्होंने समर्पित कर दिए। जो विशुद्ध स्वार्थ के लिए गए थे, उन लोगों ने इतना बड़ा त्याग किया। क्यों? क्योंकि को'ज (लक्ष्य) था देश की स्वतन्त्रता और वो आह्वान करने वाला नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जैसा पूर्ण स्वार्थत्यागी मनुष्य, इसीलिए लोगों ने पैसे दिए।

1965 के समय लाल बहादुर शास्त्री ने आह्वान किया, भाई बचत करो और एक दिन, एक समय का भोजन छोड़ दो, सब लोगों ने छोड़ दिया। 1962 में चीन के आक्रमण के समय, 1971 में बांग्लादेश की लड़ाई के समय सब लोगों ने देश के लिए त्याग किया, हमारे मजदूरों ने भी ओवरटाईम न लेते हुए, ज्यादा घंटो तक काम किया, ये प्रेरणा कैसे हो सकती है? वास्तव में जिस तरह से मनुष्य स्वार्थी है, यह सही है, उसी तरह ठीक आदमी ने, ठीक ढंग से यदि आह्वान किया तो लोग त्याग भी कर सकते हैं। किन्तु हमारे नेताओं की बात ऐसी है कि कहां कैसे अपील करना है, नेताओं को पता ही नहीं है, जैसे किसी सितार में या किसी फिडल में एक स्वर निकालने की क्षमता है, लेकिन किस तार को, किस जगह छेड़ने से वह स्वर निकल सकता है, इसकी जानकारी इनको नहीं है। इसीलिए सितार को या फिडल को इधर-उधर ऐसा-वैसा छेड़छाड़ करते हैं और फिर कहते हैं कि यहाँ से स्वर निकलता ही नहीं।

हमारे देश में बचत की प्रवृति बहुत है। अमेरिका में बहुत सारे लोग ऐसे है जिन्होंने आगे के तीन साल का क्रेडिट कार्ड भी खत्म कर दिया है, वही हमारे यहाँ उल्टा है, गरीब से गरीब आदमी भी थोड़ा पैसा बचाता है, थोड़ा सा सोना बचा लेता है, जमीन में गाढ़कर रख देता है। माने हमारे यहाँ बचत की प्रवृति है। और पहले से ही आह्वान किया होता है, कि 'स्मॉल सेविंग्स' माने बचत, यह देश के लिए करनी है। लोग अवश्य करते और 'केपिटल फोर्मेशन' का सवाल बहुत मात्रा में हल हो सकता था। किन्तु इस तरह का आह्वान करने की हिम्मत नेताओं में नहीं थी। नेताओं में, इसका कारण है, कि जो अपनी ही तन्खवाह, अपने ही हाथ से बढ़ा

लेते, एम०पी० और एम०एल०ए०, अपने ही हाथ से बढ़ा लेते है और उनको यह कहने का साहस कैसे होगा कि लोगों को त्याग करना चाहिए। तो त्याग नहीं है, यह कहना गलत होगा।

टेक्नोलोजी का प्रश्न

अब टेक्नोलोजी की बात लीजिए, क्या मॉर्डन टेक्नोलोजी के बारे में सरकार को जानकारी है? वास्तव में विदेश में भी चर्चा चल रही है कि 'ऐवरी साइंटिफिक एड्वान्समेंट' यह हितकार है या नही है? 'हिरोशिमा, नागासाकी यह उदाहरण जब उन्होंने देख लिए, तभी से उनके मन में आया कि 'साईंटिफिक एड्वान्समेन्ट, टेक्नोलोजिकल एड्वान्समेन्ट' ज्यादा होगी तो उसके ऊपर कुछ नियंत्रण होना चाहिए। नहीं तो अणु युद्ध हो सकता है, न्यक्लियर वार हो सकती है। और हिरोशिमा, नागासाकी की आवृतियां हो सकती है। नियंत्रण होना चाहिए और इसीलिए वहाँ भी ऐसे शास्त्रज्ञ निर्माण हुए जिन्होंने कहा कि 'देयर शुड बी टेक्नोलोजिकल ओमबर्शमेन्ट' माने 'टेक्नोलोजी पर नियंत्रण करने वाली कोई न कोई एक बॉडी वहाँ होनी चाहिए। ओमबर्शमेन्ट यानि नियंत्रण करने वाली बॉडी होनी चाहिए। और उस बॉडी में साइंटिस्ट को मत रखिए, टेक्नोलोजिस्ट को मत रखिए, तो जिनका सम्पूर्ण मानवता के बारे में प्रेम है, ऐसे लोगों को उसमें रखिए और उनके नियंत्रण में साईंस और टेक्नोलोजी की प्रगति होनी चाहिए, ऐसा विचार अमेरिका में, यूरोप में भी आया है।

और दूसरी बात, आज भी जो राष्ट्रपति होने वाले हैं, डॉ० अब्दुल कलाम उन्होंने एक किताब लिखी है 'इण्डिया 2020'। उस किताब में उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि विदेश से कोई भी टेक्नोलोजीकल एड न लेते हुए हमारे लिए आवश्यक जो टेक्नोलोजी है, हमारे टेक्नोलोजिस्ट, हमारे साइंटिस्ट अपने भरोसे 2020वां साल जब आएगा उसके पहले ही भारत को दुनिया के 'फ्रंट रैकिंग नेशन्स्' में बिठा

सकते हैं। एक ही बात उन्होंने कही कि इसके लिए शर्त एक ही है कि 'विल पॉवर' चाहिए, इच्छा शक्ति चाहिए'। अभाव तो इसी बात का है।

तो इस तरह से इन्वेस्टमेन्ट के बारे में, टेक्नोलोजी के बारे में, उन्होंने अपने हित को ध्यान में रखकर प्रोपेगेंडा किया। हमारे इंग्लिश एज्यूकेटिड लोग, हमारे राजनैतिक नेता उसी के शिकार बन गए और कहने लगे कि हम तो कुछ नहीं कर सकते, आत्मनिर्भर नहीं हो सकते, ऐसी बात नहीं है, हो सकते हैं, लेकिन लोगों में देशभक्ति का जागरण होना चाहिए। देश के लिए त्याग करने का आह्वान होना चाहिए। सब कुछ हो सकता है!

जिस समय विश्व व्यापार संगठन का निर्माण हुआ, भारत सरकार ने जनता को अंधेरे में रखकर, संसद की अनुमति न लेते हुए व संसद को अंधेरे में रखकर सीधे 'वर्ल्ड ट्रेड ऑरगेनाईजेशन' जॉइन कर ली। खैर! अब 'वर्ल्ड ट्रेड ऑरगेनाईजेशन' के हम सदस्य हो गए, उसी समय स्वदेशी जागरण मंच ने कहा कि यह बहुत गलत बात हुई है, इससे देश का नुकसान होगा।

डब्ल्यु० टी० ओ० का सच - लिट्स और एलबुग की जबानी

यह विश्व व्यापार संगठन! यह क्या बला है जरा देख लीजिए। जैसा मैंने कहा कि उपनिवेशो के शोषण का मार्ग समाप्त होने के बाद तुरन्त ही पश्चिमी देशों ने, गोरे देशों ने यह विचार शुरू किया कि नव-स्वतंत्र देशों पर अपना आर्थिक साम्राज्य कैसे फैलाया जा सकता है। कोई नव-स्वतंत्र देश अपने को गुलाम बनाने के लिए तैयार नहीं होगा, उनको गुलाम बनाने की वृति में कैसे लाना चाहिए, इसीलिए उन्होंने प्रचार, प्रोपेगेण्डा शुरू किया-यह मैंने प्रारम्भ में कहा। वास्तव में थोड़े विकसित देश, सारी दुनिया के अविकसित और विकसनशील, गैर गोरे देशों पर अपना साम्राज्य कैसे स्थापित कर सकते हैं इसका षडयंत्र कई दशकों से चल रहा है। उसी का एक आविष्कार विश्व व्यापार संगठन है। विकसित देशों का साम्राज्य अविकसित देशों पर कैसे हो सकता है, इन्टरनेशनल मोनिट्री फण्ड उसी के लिए है, विश्व बैंक उसी के लिए, अमेरिकन सरकार भी उसी प्रयास में है।

आपको आश्चर्य होग कि विश्व बैंक के इकॉनोमिक एडवाईजर मिस्टर लिट्स, जिन्होंने अभी तीन साल पहले इस्तीफा दिया है, उनका स्टेटमेंट आप पढिए। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि "विश्व बैंक के 'मेमोरेण्डम ऑफ एसोसिएशन' में जो लिखा था, उसके कारण मैंने वहाँ सर्विस ली, मुझे लगा अच्छे-अच्छे उद्देश्य है, प्रत्यक्ष अब मैंने अनुभव किया कि यहाँ तो गरीब देशों का शोषण करने की प्रक्रिया चल रही है।" इसीलिए मैंने उसको छोड़ा है और विश्व बैंक गरीब देशों का शोषण किस ढ़ंग से करती है, इसमें प्रक्रिया दी है, चार सेट में प्रक्रिया दी है। आप मूल स्टेटमेंट पढ़ लीजिए, प्राईवेटाइजेशन से शरूआत करके गरीब देश को लोन देना, लोन देते समय अपनी शर्तें लगाना, शर्तों के कारण उसको गरीब बनाना और गरीब बनाने के बाद उसको गुलाम बनाना। यह सारी प्रक्रिया मिस्टर स्टिग लिट्स ने दी है। जिन्होंने अनुभव के आधार पर लिखा है।

वैसे ही 'इन्टरनेशनल मोनिट्री फण्ड' के टॉप ऑफीशियल डेविसन एलबुग ने तो यहाँ तक लिखा है कि 'मैंने इन्टरनेशनल मोनिट्री फण्ड में रहते हुए इतना पाप कर्म किया है कि गरीब लोगों के खून मेरे हाथ पर है और दुनिया की सारी नदियाँ आकर भी मेरा हाथ साफ नहीं कर सकती, इतना खून मेरे हाथ पर है। इसका मुझे पश्चाताप हो रहा है। 'ऐसा उन्होंने कहा है। जो जानकारी रखते है, वे यह सब बातें कहते हैं। विश्व व्यापार संगठन इसीलिए स्थापित किया गया कि उसके अन्दर सब देश आ जाए, सब देश आते हैं तो उसमें जो गोरे देश है वे गैर-गोरे देशों पर अपना प्रभाव जमा सके।

वहाँ की कार्यशैली क्या है? ऐसा है कि वहाँ जितने सदस्य है, विकसित, अविकसित, गोरे, गैर-गोरे सबने मिलकर और विचार विमर्श करते हुए निर्णय लेना। यह वास्तव में लोकतान्त्रिक पद्धति है, पर वहाँ ऐसा नहीं होता है। वहाँ क्या करते हैं कि गोरे देशों के 8-10 प्रतिनिधि पहले इकट्ठा आते हैं, उसको 'ग्रीन रूम' कहते हैं। और गोरे देशों के हित के लिए गैर-गोरे देशों पर क्या निर्बन्ध लगाने चाहिए, इसका विचार करते है। और वो विचार होने के बाद 'ग्रीन रूम' के बाहर

आते हैं और बाहर जो लोग है उनको बताते है कि भई यह निर्णय हो चुका है, इसमें चर्चा नहीं, कुछ नहीं।

मलेशिया के प्राइम मिनिस्टर महाथिर मोहम्मद ने इसके खिलाफ आवाज उठाई, भारत ने आवाज नहीं उठाई। भारत के प्रतिनिधि जो डब्ल्यू० टी० ओ० में जाते थे, वो तो यूरोप, अमेरिका के लोगों के सामने झुक जाते थे। इसीलिए चित्रा सुब्रहमण्यम् ने एक पुस्तिका लिखी है कि 'इण्डिया इज फॉर सेल', उसमें उन्होंने लिखा है कि कैसे हमारे प्रतिनिधि तैयारी भी नहीं करते बोलते भी नहीं।

एमनेशिया की बीमारी

बाद में इस परिस्थिति में अन्तर आया, हम लोगों के कारण। तो पहले वहाँ जो गैर-गोरे देश है, उनकी ओर से महाथिर मोहम्मद ने सबसे पहले अपनी आवाज उठाई, उन्होंने एक समिति का निर्माण किया, उसका नाम था 'साउथ कमीशन'। उसके अध्यक्ष थे मिस्टर न्येरेरे, तंजानिया के, और जनरल सैक्रेट्री थे डॉ० मनमोहनसिंह, भारत के। और उनको बताया गया कि किस तरह से आर्थिक आक्रमण हो रहा है, किस तरह से आर्थिक साम्राज्यवाद आ रहा है, इसका अध्ययन करना और उसको रोकने के लिए क्या उपाय करने चाहिए, यह सुझाव देना, इत्यादि काम उनको दिया था। उस कमेटी की रिपोर्ट आपको मार्केट में भी मिल सकती है 'चैलेंज टू दी साउथ' उस रिपोर्ट का नाम है। यह पूरी रिपोर्ट डॉ० मनमोहनसिंह के नेतृत्व में बनाई गई है जिसमें गोरे देशों को कैसे रोका जा सकता है, यह भी बताया गया है। साउथ-साउथ कॉ- ऑपरेशन जैसे कुछ इलाज बताए गए है कि कैसे रोक सकते हैं। आप वो पढ़ेंगे तो आपको लगेगा कि कोई स्वदेशी जागरण मंच का आदमी है, वह लिख रहा है। किन्तु यही डॉ० मनमोहनसिंह जैसे ही फाईनेंस मिनिस्टर बन गए, तो जो उन्होंने लिखा था, वो ही भूल गए। यह आश्चर्य की बात है! और यही बात यशवंत सिन्हा की है।

स्वदेशी जागरण मंच की एक चिंतन बैठक नागपुर में हुई थी। उसमें तीनों दिन यशवंत सिन्हा उपस्थित थे। अन्तिम दिन उनका भाषण हुआ उन्होंने कहा कि 'विश्व व्यापार संगठन में रहने के कारण भारत का नुकसान हो रहा है। हमें हिम्मत के साथ विश्व व्यापार संगठन को छोड़ देना चाहिए। 'यह यशवंत सिन्हा का भाषण था, लेकिन जैसे ही फाइनेन्स मिनिस्टर बन गए अपनी कही हुई बात भूल गए। मालूम होता है फाइनेन्स मिनिस्टर बनते ही एक बीमारी हो जाती है, जिसका नाम अंग्रेजी में है 'एमनेशिया' एमनेशिया का मतलब है यह कि पूर्ण विस्मरण! मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ आदि सारा भूल जाते हैं। यह 'एमनेशिया' फाइनेन्स मिनिस्टर बनने के कारण हो जाता है। इसके द्वारा जैसे डॉ० मनमोहन सिंह, वैसे यशवंतसिन्हा भी रनब भूल गए और गलत बातें बोलने लगे।

डब्ल्यु० टी० ओ० - गोरे देशों के दोहरे मापदण्ड

स्वदेशी जागरण मंच चाहता है कि हमारा देश आत्म-निर्भर हो। लेकिन विदेशियों का षडयन्त्र चल रहा है कि हमारे देश के कृषि पर, हमारे देश के एक-एक उद्योग पर विदेशियों का कब्जा हो जाए। अब हमारा कृषि प्रधान देश है। विश्व व्यापार संगठन में सबके लिए एक स्टेण्डर्ड नहीं है। हमारे लिए अलग है, अमेरिका के लिए अलग है। अब कृषि की दृष्टि से केवल उदाहरण के लिए बताता हूँ, अमेरिका के किसानों को जो पहले सब्सिडी मिलती थी उससे चार गुना सब्सिडी उन्होंने बढ़ाई है। भारत और विकसनशील देशों को अमेरिका कहता है 'तुम अपने यहाँ सब्सिडी कम करो, और आखिर में सब समाप्त करो'। अपने किसानों की वे सब्सिडी बढ़ा रहे हैं, हम लोगों को कहा कि सब्सिडी खत्म करो? कारण क्या है? अब देखिए, अमेरिका का एक कानून है, 1988 का एक कानून है, उसमें स्पेशल 301 करके क्लॉज है। उसमें स्पष्ट दिया है कि बाहर के देश का, यदि कोई भी माल हमारे बंदरगाह में आता है और वो हमारे देश में उतारने से, हमारे देश के उद्योग और कृषि को नुकसान होगा, ऐसा यदि हमें लगता है? तो हम बंदरगाह से माल को उतरने नहीं देंगे, वापिस भेज देंगे, लेकिन साथ ही साथ उसमें ऐसा है कि हमारा माल यदि किसी के यहाँ जाता है, उसके बंदरगाह पर में यदि अमेरिका का माल आता है, तो उसे हमारा माल उतार लेना ही चाहिए। यदि वे हमारा माल नहीं उतार लेंगे और अपने मार्केट में नहीं भेजेंगे तो हम उसके ऊपर आर्थिक प्रतिबन्ध लगायेंगे। ये कौनसी नीति है?

हमारी सरकार कहती है कि हम वर्ल्ड ट्रेड ऑरगेनाइजेशन से कैसे बाहर आ जायेंगे। ये सारा ऑरगेनाइजेशन दुनिया का नहीं है, यह विकसित देशों के लिए हैं, और विकसित देश के हित के लिए इसका उपयोग किया जा रहा है। अब देखिए की वर्ल्ड ट्रेड ऑरगेनाइजेशन में जो विकसनशील देश की मेजोरिटी है, उनकी बात मानी नहीं जाती। गोरे देश, विकसित देश 8-10 ही हैं, एक्चुली 8 ही है। उसमें उनकी दादागिरी सब पर चलती है।

डब्ल्यु० टी० ओ० : तोड़ो या छोड़ो

महाथिर मोहम्मद ने एक बात कही थी। पहले तो महाथिर मोहम्मद ने भारत को प्रार्थना की कि जितने विकसनशील देश है उनका एक ब्लॉक बनाने की आवश्यकता है। ओर चूंकि भारत, यह विकसनशील देशों में सबसे बड़ा है। भारत को हमारा नेतृत्व करना चाहिए। हम आपका नेतृत्व मानने को तैयार हैं। यह बात महाथिर मोहम्मद ने सबकी ओर से कही। भारत ने नेतृत्व लेने से इंकार कर दिया। फिर उन्होंने यह कहा वर्ल्ड ट्रेड ऑरगेनाइजेशन के अन्तर्गत रहते हुए जो विकसनशील देश है, उन्होंने अपना एक ब्लॉक बनाना चाहिए, अपना एक ग्रुप बनाना चाहिए। इस ब्लॉक ने विकसित देशों को धमकी देनी चाहिए कि, डब्ल्यु० टी० ओ० में आप हमारे साथ इक्वल फुटिंग का व्यवहार नहीं करते तो हम डब्ल्यु० टी० ओ० छोड़ देंगे। वो तो इक्वल फुटिंग का व्यवहार करने वाले नहीं है। उनको दादागिरी चलानी हैं, तो डब्ल्यु० टी० ओ० छोड़ देना है और उसके बाद स्वेदशी जागरण मंच ने यह कहा कि विकसनशील देशों ने एक ग्रुप बनाकर पहले डब्ल्यु० टी० ओ० में रहकर धमकी देना और मानेंगे नहीं तो डब्ल्यु० टी० ओ० के बाहर आकर सैकण्ड डब्ल्यु० टी० ओ० माने दूसरा विश्व व्यापार संगठन, विकसनशील देशों का अलग खड़ा करना। और उनके साथ हम स्पर्धा करें, सभी विकसनशील देश एकत्रित होकर उनके साथ झगड़ा करें। ऐसा हम लोगों ने कहा।

ऐसा है, शुरू-शुरू में जब हम बोलते थे, तो वे कहते थे कि आपके बोलने का कोई उपयोग नहीं है। जैसा कहा जाता है कि 'बुढ़िया कहती तो सच है, लेकिन सुनता कौन हैं'। आपने देखा होगा। ऐसा था कि हम लोग अभी जो नई सरकार आई है, नई सरकार के लोगों से, प्रधानमंत्री को लेकर सबके साथ हम बात करते थे। उनको समझाने की कोशिश करते थे। उनको समझाते थे, तो वे लोग कहते थे कि हम लोग समझ गए हैं। लेकिन हमारे वापिस आने के बाद ब्यूरोक्रेट्स उनके पास पहुँचते थे। ब्यूरोक्रेट्स उनको कहते थे कि अरे! यह स्वदेशी वाले! यह क्या जानते हैं? मजदूर संघ, किसान संघ वाले अर्थशास्त्र क्या जानते हैं? इनको तो अर्थशास्त्र का पता ही नहीं है, ये लोग तो केवल भावनाप्रधान है, इमोशनल है,

सेन्टीमेन्टल हैं, तो फिर सरकार का निर्णय बदल जाता था। अब आप जानते हैं कि शुरू से हमारे देश में एक बीमरी हैं, अच्छे- अच्छे लोग भी खरीदे जाते हैं, छोटे लोग तो खरीदे जाते ही हैं, बड़े लोग भी खरीदे जाते हैं, ब्यूरोक्रेट्स खरीदे जाते हैं, लीडर लोग भी खरीदे जाते हैं, कुछ मिनिस्टर भी खरीदे जाते हैं और जो प्रतिष्ठित लोग हैं उनको खरीदने का प्रतिष्ठित रास्ता भी है। 'क्रूड मेथड' नहीं हैं प्रतिष्ठित रास्ता है, उनके किसी रिश्तेदार को अमेरिका में सारे शिक्षा-दीक्षा के लिए भेजना, विश्व बैंक में नौकरी देना, आई०एम०एफ० में नौकरी देना, तरह-तरह के मार्ग हैं जो प्रतिष्ठित दिखते हैं। और इसके कारण हम लोग जो बोलते थे, उसका प्रभाव नहीं होता था।

हम लोगों ने, मजदूर संघ, किसान संघ ने, बाकी लोगों ने भी अवश्य इसके बारे में आवाज उठाई। वह आवाज जब प्रबल हो गई तो फिर सरकार को भी सोचना पड़ा, कि ब्युरोक्रेटस की बात मानने से नहीं चलेगा। जनमत जागरण हुआ है और उसके कारण आपने देखा होगा कि दोहा में मिनिस्टर मारन् को कितनी मात्रा में यश आया-कितनी मात्रा में अपयश आया, यह महत्व का प्रश्न नहीं है। महत्व का प्रश्न यह है कि शुरू से लेकर आजतक कभी भी भारत सरकार ने वहाँ प्रतिकार नहीं किया था, दोहा में प्रतिकार किया और यह हम सब लोगों के प्रभाव का, दबाव का प्रभाव है। यह बात आप ध्यान रखिए। वहाँ से जब मारन् वापिस आए तो हमको किसी ने कहा कि आप जाकर उनका अभिनन्दन कीजिए। हमने उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया, मारन ने दोहा में जो भूमिका निभाई उसका हमने सार्वजनिक रूप से अभिनन्दन किया।

उसी समय से अमेरिका के प्रयास चल रहे थे कि इनके विरोध को कमजोर कैसे बनाया जाए, वहाँ जो विश्व व्यापार संगठन में कमजोर देश हैं, बिल्कुल गरीब देश हैं, उनको खरीदने का काम वहीं शुरू हुआ था, उनको खरीदने का काम, उनके प्रतिनिधियों को कहना कि तुम चले जाओ, और वहीं से ये काम शुरू हुआ। हमारे कुछ ब्यूरोक्रेट्स तो पहले से खरीदे गए हैं, बाकी लोगों को भी कैसे खरीदा जा सकता है, यह अमेरिका का प्रयास चल रहा है हम जानते हैं, इसीलिए हमने कहा

कि हम मिनिस्टर मारन को धन्यवाद देते हैं, और अभिनन्दन करते हैं, किन्तु प्रत्यक्ष जाकर हम नहीं मिल सकते, क्योंकि दो साल के अर्न्तगत क्या क्या परिणाम होंगे, यह देखना पड़ेगा अब दोहा के बाद दो साल के बाद मंत्री परिषद होने वाली है मंत्री परिषद में भारत सरकार ने अपनी भूमिका दोहा के जैसे नही रखनी चाहिए, इसके लिए अमेरिका जी-जान से कोशिश कर रही है, क्या उस कोशिश का प्रभाव होता है या हम लोगों का प्रभाव जैसा था वैसे कायम रहता है, यह देखना पड़ेगा क्योंकि सरकार आरग्युमेन्ट्स नहीं सुनती, यह दुख की बात है आरग्युमेन्ट्स से वह नहीं मानती, दबाव से मानती हैं। पहले विश्व बैंक, इंटरनेशनल मोनिट्री फण्ड, अमेरिकन सरकार, यूरोप की सरकारें इनका दबाव था इसके कारण स्वदेशी विरोधी नीति लेकर चले थे। बीच में स्वदेशी जागरण मंच, मजदूर संघ, किसान संघ और बाकी सभी संस्थाएं, हम लोग कोई देशवृति का ठेका हमारा है, ऐसा नहीं कहते, देशभक्त सभी लोग हैं, सभी लोगों ने आवाज उठाई, उस दबाव में आकर दोहा में ठीक भूमिका भारत सरकार ने ली, किन्तु अभी अगले मंत्री परिषद में फिर से दोहा की भूमिका नहीं अपनानी चाहिए, सरकार ने झुकना चाहिए, यह प्रयास चल रहा है इसके कारण अगले मंत्री परिषद तक में अभी थोड़ा समय रहा है। सवा साल का समय रहा, तो हमें इतना जन-जागरण करना है इसके कारण हमारा दबाव फिर से आ जाए, जनमत का दबाव फिर से आ जाए और अमेरिकन दबाव के सामने जो सरकार झुकती है, उनको पता चले कि यदि हम अमेरिकन सरकार के समक्ष झुकेगें तो फिर हमारी भी जान खतरे में है, इसीलिए हमारे दबाव के कारण वो ठीक भूमिका जैसे दोहा में ली वैसी उन्होनें लेनी चाहिए, इतना जन-जागरण और जनमत का प्रभाव बढ़ाना चाहिए।

जन -विरोधी आर्थिक नीतियाँ

भारतीय मजदूर संघ का अखिल भारतीय अधिवेशन त्रिवेन्द्रम में हुआ था। वहाँ ओपन सैशन हुआ, बहुत बड़ी अच्छी हाजरी थी। उसमें सारे यह स्वदेशी वगैरह की बात हमने कही, और उसके बाद हमने यह कहा कि भई, भाजपा की सरकार,

हमारे हित के लिए छोड़िए, किसान मजदूरों के लिए छोड़िए, अपने खुद के हित के लिए तो कुछ काम करना चाहिए, भाजपा की इज्जत बचाने के लिए तो उन्होनें काम करना चाहिए, क्योंकि मैने यह कहा कि आप गलत नीतियां अपना रहे हैं, आर्थिक नीतियां गलत अपना रहे हैं, जिसके कारण लाखों मजदूर बेरोजगार होने वाले हैं, किसान भूखे मरने वाले हैं, आत्महत्या किसान पहले ही कर रहे हैं, पहले ही वह कर्जे में हैं, कैसे कर्जा भरना, नहीं जानते, आप बाहर से माल ला रहे है, आयात शुल्क उठा लिया, कांटिटेटिव रिस्ट्रिक्शन उठा लिया, इसके कारण कृषि का माल जो विदेश से आता है, वो रास्ते में बेचा जाता है, हमारे कृषकों का माल ज्यादा मंहगा हो जाता है, इसीलिए वह पड़ा रहता है, कृषको को आत्महत्या के अलावा कोई रास्ता नहीं रहेगा, लाखों मजदूर बेरोजगार हो रहे हैं।

मतदाता भारतीय है, विदेशी नहीं

तो त्रिवेन्द्रम में हमने कहा कि भाई, आप अपनी पार्टी का तो विचार कीजिए, आपकी पार्टी को, आज नहीं कल, कल नहीं परसों चुनाव में आना पड़ेगा या नहीं, तो चुनाव में आपके जो मतदाता रहेंगे, वो अमेरिकन नहीं रहेंगे, जिनके दबाव में आप हर काम कर रहे हैं, वह यूरोपियन नहीं रहेंगे, जिनके दबाव में आकर आप काम कर रहे हैं, वह तो भारतीय रहेंगे। और भारतीय लोगों को आप यदि गलत ढंग से और उनको सतायेंगे तो आपको मत कैसे मिलेंगे, संयोग की बात थी कि त्रिवेन्द्रम में हमारा भाषण हुआ दूसरे दिन से इलेक्शन के रिजल्टस आना शुरू हुआ उत्तर प्रदेश, पंजाब, उतरांचल और सारे रिजल्टस क्या आए? आप जानते है, पत्रकार हमारे पास आए। क्या ठेंगडी जी आप जानते थे कि क्या-क्या होगा, हमने कहा हम जानते नहीं थे। यह कॉमन सेन्स की बात है, तो अपने पार्टी के हित के लिए तो इन्होनें ठीक ढंग से व्यवहार करना चाहिए।

प्रिंट मीडिया में विदेशी निवेश

ठीक ढंग से व्यवहार नहीं हो रहा इसका एक ही उदाहरण देकर और मैं यह भाषण पूरा करना चाहता हूँ। अभी- अभी की बात है फोरेन प्रिंट मिडिया की। फोरेन इन्वेस्टमेन्ट, प्रिंट मीडिया में लाना यह पुराना षड्यन्त्र है, नई बात नहीं है, चुनाव होने के पहले हमने बीजेपी के नेताओं को कहा था, कि आप इन्फोरमेशन टैक्नोलोजी डिपार्टमेन्ट फलाने फलाने आदमी को मत दीजिये। उन्होनें कहा - अरे, आश्चर्य की बात है अभी तो चुनाव हुआ ही नहीं आप पर्टीकुलर आदमी का नाम ले रहे हैं, पर्टीकुलर डिपार्टमेन्ट का नाम ले रहे हैं, तो हमने कहा कि हम अफवाहों के आधार पर नहीं, मेरे पास डायरेक्ट जानकारी है कि, इस आदमी को अपना हथियार बनाकर, अपना माध्यम बनाकर, हिन्दुस्तान के मीडिया पर छाने का षडयन्त्र विदेशियों का हैं।

उसको इतने दिन हो गए, इन्होनें प्रयास किया। किन्तु प्रेस वालों ने विरोध किया, जॉइन्ट पार्लियामेन्ट्री कमेटी इसके लिए बिठाई गई, उन्होनें स्पष्ट कहा कि हमारे प्रिंट मीडिया में फारेन इन्वेस्टमेन्ट नहीं आनी चाहिए। अब अचानक निर्णय आया कि प्रिन्ट मीडिया में फॉरेन इन्वेस्टमेन्ट आ रही है। अचानक निर्णय लिया। प्रेस वालों के विरोध के बावजूद, जॉइन्ट पार्लीयामेन्ट्री कमेटी के विरोध के बावजूद, जनता की राय न लेते हुए, पार्लीयामेन्ट की राय न लेते हुए, एकदम, यह अचानक हमला हुआ।

संघ की सहमति का झूठा प्रचार

लेकिन अपनी चमड़ी बचाने के लिए एक प्रचार शुरु किया, क्या था उनमें कहा कि प्रिंट मीडिया में फॉरेन इन्वेस्टमेन्ट आनी चाहिए, इस बात को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर-संघचालक माननीय सुदर्शन जी भी अनुमति दे रहे हैं, उनकी भी इच्छा है। अब इतनी झूठी बात आकाशवाणी से बार-बार प्रसारित होती है। आपने सुना होगा। और समाचार पत्रों में से, कई समाचार पत्र, मैं ऐसा नहीं कहता सभी

समचार पत्र झूठ लिखते थे। 'ऐ सेक्शन ऑफ द प्रेस' कई समाचार पत्र इसका प्रचार कर रहे थे। वास्तव मे सुदर्शन जी ने कहा है कि 'फॉरेन इन्वेस्टमेन्ट को हम लाए, इसका उन्होंने स्वागत नहीं किया। उन्होंने कहा कि फारेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट को तो मत लाईये, हाँ एन० आर० आई० है, एन० आर० आई० माने अनिवासी भारतीय, उनका पैसा यदि आता है, तो उसमें आपत्ति नहीं है। तो उन्होंने एन० आर० आई० का स्वागत किया, फॉरेन इन्वेस्टमेन्ट का स्वागत नहीं किया। सरकार ने गलत ढंग से प्रचार किया। अब इससे और गलत काम क्या हो सकता है?

वास्तव में स्वदेशी जागरण मंच प्रिंट मीडिया में जो फॉरेन इन्वेस्टमेन्ट आ रही है, उसका विरोध कर रही है। इतना ही नहीं, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में फॉरेन इन्वेस्टमेन्ट हैं, हमारा कहना है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से पूरी तरह से जो फॉरेन इन्वेस्टमेन्ट है, वापस जाना चाहिए। तो, हम तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से भी फॉरेन इन्वेस्टमेन्ट वापिस हो जाए, ऐसा कह रहे हैं। और ये कह रहे हैं, कि फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेन्ट का आर०एस०एस० ने स्वागत किया है? इससे और झूठ बात क्या हो सकती है। मतलब यह कि, अब प्रेस के कुछ लोग, सरकार के कुछ लोग झूठ बोलने पर भी उतारू हो गए हैं, ऐसा दिखता है। ऐसी परिस्थिति में से हम जा रहे हैं।

विनिवेश भी गलत तरीके से

सवा साल के बाद डब्ल्यू० टी० ओ० का मंत्री परिषद् का जो मामला आने वाला है, उसके लिए दबाव बनाना है और यह जो एक-एक उद्योग विदेशियों के हाथ में जा रहा है, प्राईवेटाइजेशन कहते हैं, अरे! जो प्रोफिट मेकिंग इण्डस्ट्री हैं, वो भी आज प्राईवेट लोगों को दे रहे हैं। अगर आपको देना ही हैं, तो वहाँ के मजदूरों को दीजिए। अपने-अपने उद्योग वहाँ के मजदूर चला सकते हैं। लोग कहते हैं मजदूर कैसे चलायेंगे? हमने कहा, मिनिस्टर को भी क्या जानकारी होती है, वो भी मैनेजर और टेक्नोलिजिकल लोगों की सहायता से चलाते हैं, उसी तरह मजदूर

भी चलायेंगे। लेकिन पब्लिक सेक्टर की प्रोफिट मेकिंग इण्डस्ट्रीज का भी प्राईवेटाईजेशन कर रहे है।

राष्ट्र की सम्प्रभुता खतरे में

एक-एक बात गलत ढंग से चल रही है। इस दृष्टि से जन-जागरण हो, लोगों को शहरों में, गाँवों में इस बात का पता चले कि गलत पॉलीसीज है, और उसके कारण एक प्रचण्ड दबाव खड़ा हो! उधर से भी दबाव आएगा, विश्व बैंक, इंटरनेशनल मोनिट्री फण्ड, अमेरिकन सरकार, यूरोप की सरकारें इनका दबाव आएगा, और उनका विरोध करना है तो इधर से जबरदस्त दबाव, जनमत का, जन-जागरण का जाना चाहिए। तभी तो देश को बचाया जा सकता है। वरना अपना देश भी आर्थिक साम्राज्यवाद में आ जाएगा। तो हमारी 'सोवरनिटी' खतरे में हैं, सम्प्रभुता खतरे में है।

'सोवरनिटी' की परिभाषा अपने शास्त्रों ने की है "इक्षवांकुनामियम् भूमि सशैले जलकानना, मृगपक्षमनुष्याणाम् निग्रहानुग्रहेशु" याने सारी भूमि इक्षवाकु की है, शैल, जल, कानन इनके साथ सभी भूमि इक्षवाकु की है। 'मृगपक्षमनुष्याणाम' मृग हो, पक्षी हो, मनुष्य हो सबका 'निग्रहानुग्रहेशु अपि' उनका निग्रह करना और उन पर अनुग्रह करना, इसका पूरा अधिकार इक्षवाकु को है, यह सारी 'सोवेरेनिटी' की परिभाषा है। हम सोवेरन है, ऐसा लिखा गया है। लेकिन सोवेरेनिटी पर आँच आ रही है, आक्रमण हो रहे है। अपनी सोवेरेनिटी जाएगी, इण्डिपेन्डेन्स जाएगा इस दृष्टि से यह जो गोरे देशों का षड्यंत्र है, उसको फेल करने के लिए, और उस दृष्टि से भारत सरकार स्वदेशी के पक्ष में रहे, विदेशियों के पक्ष में न रहे यह दबाव सरकार पर लाने के लिए सब लोगों को ज्यादा से ज्यादा प्रयास करना चाहिए। इतनी ही प्रार्थना करते हुए मैं मेरा भाषण पूरा करूंगा।

प्रकाशकीय निवेदन

स्वदेशी जागरण मंच द्वारा जोधपुर में, दिनांक 8 जुलाई, 2002 को आयोजित, एक सार्वजनिक सभा में राष्ट्र ऋषि श्रद्धेय श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी ने स्वेदशी आन्दोलन की समग्र -व्याख्या करते हुए एक ऐतिहासिक उदबोद्धन दिया।

सभी देशभक्तों के लिए पाथेय स्वरूप इस भाषण को अक्षरश : लिपिबद्ध किया गया है, फिर भी शेष रही त्रुटियों के लिए स्वदेशी विचार केन्द्र के हम सभी सहयोगी क्षमा प्रार्थी हैं।

निवेदक

डॉ० रणजीत सिंह

स्वदेशी विचार केन्द्र जोधपुर

स्वाभिमान से स्वदेशी अपनाएँ

वस्तुओं के नाम	स्वदेशी उत्पाद – प्रयोग करें	विदेशी उत्पाद – बहिष्कार करें
नहाने का साबुन	संतुर, निरमा, स्वस्तिक, मैसूर सँडल, विप्रो-शिकाकाई, फ्रेश, अफगान, कुटीर, होमाकोल, प्रिमियम, मीरा, मेडिमिक्स, विमल, चंद्रिका, गंगा, सिंथाल, वनश्री, सर्वोदय तथा लघु-कुटीर-उद्योग के अन्य स्थानीय उत्पादन	लक्स, लिरील, लाईफबॉय, पियर्स, रेक्सोना, हमाम, जय, मोती, कॅमे, डॉव, पॉण्ड्स, पामऑलिव, जॉनसन, क्लिएरसिल, डेटॉल, लेसान्सी, जस्मीन, गोल्डमिस्ट, लक्मे, ॲमवे, क्वांटम, मार्गो
कपड़े धोने का साबुन	स्वस्तिक, ससा, प्लस, आधुनिक, निरमा, ॲक्टो, विमल, हीपोलीन, टी-सीरीज, होमाकोल, डेट, पीतांबरी, बी.बी., फेना, उजाला, टाटा शुद्ध, इझी, घड़ी, जेंटिल तथा अन्य कुटीर और लघु उद्योग के निर्मित साबुन।	सनलाईट, व्हील, एरियल, चेक, डबल, ट्रीलो, 501, ओके, की, रिबेल, ॲमवे, क्वांटम, सर्फ एक्सेल, रिन, विमबार, रॉबिन ब्लू और हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड के अन्य उत्पादन।
टूथपेस्ट, दंतमंजन, टूथब्रश	स्वदेशी, बबूल, प्रॉमिस, विको, अमर, ओरा, अँकर, डाबर, चॉईस, टू-जेल, मिसवाक, अजय, हर्बोडेंट, अजंता, गरवारे ब्रश, क्लासिक, ईगल, दंतपोला, बंदर छाप, बैद्यनाथ, इमामी, युवराज और अन्य उत्पादन।	कोलगेट, सिबाका, क्लोज-अप, पेप्सोडेंट, सिग्नल, मॅक्लीन्स, प्रुडंट, ॲमवे, क्वांटम, अक्वा फ्रेश, नीम, ओरल-बी, फॉरहन्स।
दाढ़ी का साबुन ब्लेड्स	गोदरेज, अफगान, इमामी, सुपर, स्वदेशी, सुपरमॅक्स, अशोक, पनामा, वी-जॉन, टोपाज, प्रीमियम, पार्क ॲवेन्यू, लेझर, विद्युत, जे.के. तथा अन्य स्थानीय उत्पादन।	पामऑलिव, ओल्ड स्पाईस, निविया, पॉन्डस्, प्लैटिनम, जिलेट, सेवेन-ओ-क्लॉक, विल्मैन, विल्टेज, इर्रॅस्मिक, लॅक्मे, डेनिम आदि।
चाय, कॉफी	गिरनार, हसमुख, टाटा टी, आसाम टी, सोसायटी, सपट (इंस्टंट), डंकन, ब्रह्मपुत्र, एम.आर., सन टिप्स, इंडिया, अशोक, तेज, टाटा कॅफे, कंसोलिडेटेड, कॅफे, टाटा-टेटली, और अन्य स्थानीय उत्पादन।	ब्रुक बाँड, ताजमहल, रेड-लेबल, डायमंड, लिप्टन, ग्रीन लेबल, टाईगर, नेसकॅफे, नेसले, डेल्का, ब्रू, सन-राईज, थ्री फ्लावर्स।
शीतलपेय, शरबत, चटनी, अचार, मुरब्बा	एनर्जी, सोसयो, कॅम्पाकोला, गुरूजी, ओन्जुस, जाम्पिन, नीरो, पिंगो, फ्रूटी, आस्वाद, डाबर, माला, रॉजर्स, बिसलेरी, रसना, हमदर्द, मॅप्रो, रेनबो, कॅल्वर्ट, स्वीटेम्ब्लिका, रूह-आफजा, जय गजानन, हल्दीराम, गोकुल, बीकानेर, वेकफील्ड, नोगा, प्रिया, अशोक, मदर्स रेसेपी, उमा तथा स्थानीय उत्पादन।	लेहर, पेप्सी, सेवन-अप, मिरींडा, टीम, कोका-कोला, मॅकडॉवेल, मॅगोला, गोल्डस्पॉट, लिम्का, सिट्रा, थम्स-अप, स्प्रिंट, ड्यूक्स, फॅन्टा, कॅडबरी, कॅन्डा ड्राय, क्रश।
आईस क्रीम	दिनशॉ, जॉय, वाडीलाल, श्रीराम, पेस्तनजी, नेचर वल्र्ड, गोकुल, अमूल, हिमालय, निरुला, आरे, पेरिना, मदर डेयरी, अशोका, विंडी, हॅव-मोर, वेरका तथा अन्य स्थानीय उत्पादन।	कॅडबरी, डॉलॉप, नाईस, ब्रुक ब्रांड के उत्पादन, वॉल्स, क्वालिटी, बास्किन-रॉबिन्स, यांकि-डूडल्स, कॉरनेट्टो।
लेखन सामग्री	जीफ्लो, विल्सन, कॅम्लीन, रेव्हलॉन रोटोमॅक, सेलो, स्टिक, चंद्रा, मोंटेक्स, कॅमल, बिट्टू, स्टिक, प्लेटो, कोलो, भारत, त्रिवेणी, फ्लोरा, अप्सरा, नटराज, लायन, हिन्दुस्तान, ओमेगा, लोटस तथा अन्य स्थानीय उत्पादन।	पार्कर, पायलट, विंडसर-न्यूटन, फायबर-कॅसल, लक्झर, बिक, माँट ब्लैंक, कोरस, ॲस, रोटरिंग।